आर.एन.आई. पंजीयन क्र. 39596/82 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)

साप्ताहिक

मालव अँचल

वर्ष 48 अंक 02 (प्रति रविवार) इंदौर, 29 सितम्बर से 05 अक्टूबर 2024 पृष्ठ-8 मूल्य 3 रुपये

लद्दाख में एलएसी पर तैनात यूनिफॉर्म फोर्स की जल्द जम्मू वापसी संभव

आतंक पर बड़े प्रहार की तैयारी-सूत्र

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में बढ़ते आतंकी हमलों और पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) को लेकर भारत-चीन के बीच चल रहे गतिरोध के 'समाधान' को लेकर चल रही बातचीत में एक बड़ा कदम उठाने की तैयारी चल रही है। जिसके तहत सरकार पूर्वी लद्दाख में तैनात यूनिफॉर्म फोर्स को जम्मू स्थित 16वीं कोर में वापस भेज सकती है। 2020 में गलवां हिंसा के बाद जब भारत और चीन में गतिरोध चरम पर था, तो जम्मू के रियासी में तैनात यूनिफॉर्म फोर्स को काउंटर टेररिज्म की ड्यूटी से हटाकर बतौर बैकअप फोर्स एलएसी पर तैनात कर दिया गया था। वहीं, जैसे ही जम्मू से विशेष आतंकवाद रोधी राष्ट्रीय राइफल्स (आरआर) की यूनिफॉर्म फोर्स को वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तैनात किया गया, तो जम्मू डिविजन में आतंकी हमलों में तेजी देखी गई। उल्लेखनीय है कि हाल ही में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा था कि चीन के साथ खासतौर से सैनिकों की वापसी (डिसइंगेजमेंट) से संबंधित लगभग 75 फीसदी समस्याएं सुलझ गई हैं।

16वीं कोर में वापस जा सकती है यूनिफॉर्म फोर्स-लद्दाख में तैनात सैन्य सूत्रों ने एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र से इस बात की पुष्टि की कि यूनिफॉर्म फोर्स को वापस जम्मू स्थित 16वीं कोर में भेजने की तैयारियां शुरू हो गई हैं। उन्होंने बताया कि भारत और

चीन लंबे समय से पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के संभावित समाधान को लेकर बातचीत कर रहे हैं, जिसमें भारतीय सेनाओं को एलएसी पर 2020 में गलवान हिंसा से पहले की स्थिति बहाल किए जाने को लेकर भी चर्चा चल रही है। जिसके तहत भारतीय सैनिक की पहुंच एलएसी पर कुछ पेट्रोलिंग पॉइंट तक या कुछ हिस्सों पर बनाए गए बफर जोन तक हो सकती है। सूत्रों का कहना है कि यूनिफॉर्म फोर्स को अगले साल के मध्य तक वापस 16वीं कोर में भेजा जा सकता है, लेकिन इससे पहले लद्दाख में तैनात 14वीं कोर फायर एंड फ्यूरी में जरूरी पुनर्गठन किया जाएगा।

मई-जून 2025 तक पूरा होगा रिस्ट्रक्चरिंग का काम-सूत्रों ने बताया कि सेना जल्द ही 72 इनफैंट्री डिविजन को बढ़ाने की तैयारियों में जुटी है, जिसके मई-जून 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है। यह डिविजन पानागढ़ (पश्चिम बंगाल) स्थित 17 माउंटेन स्ट्राइक कोर (एमएससी) के तहत काम करती थी, जिसे नॉर्दर्न कमांड में आने वाली 14 कोर के तहत पूर्वी लद्दाख में तैनात किया जा सकता है। जिसके बाद राष्ट्रीय राइफल्स की यूनिफॉर्म फोर्स (लगभग 18,000 जवानों के साथ) को 16 कोर में वापस भेज दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि स्ट्राइक कोर का इस्तेमाल दुश्मन के खिलाफ तेजी से हमला करने के लिए किया जाता है। फिलहाल सेना के पास चार स्ट्राइक कोर हैं। इनमें मथुरा स्थित 1 कोर, अंबाला स्थित 2 कोर, भोपाल स्थित 21 कोर और पानागढ़ में 17 एमएससी। सूत्रों का कहना है कि चीन से मिल रही चुनौती को देखते हुए 1 कोर और 17 कोर को हाल ही में एलएसी पर तैनात करने का फैसला किया गया था। इनमें से 17 माउंटेन स्ट्राइक कोर (एमएससी) को उत्तर पूर्व और सिक्किम में तैनात किया गया है, जबकि 1 स्ट्राइक कोर को लद्दाख में सीमा की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह स्ट्राइक कोर नॉर्दन कमांड के तहत 14 कोर में आती है, जिसका मुख्यालय निम्मू में है।

भीषण सर्दी में भी लद्दाख में तैनात रही यूनिफॉर्म फोर्स-सूत्रों ने बताया कि इनमें से 1 कोर पहले केवल पाकिस्तान की सीमा से लगे पश्चिमी क्षेत्र के लिए जिम्मेदार थी, लेकिन नए फैसले के तहत अब उसे चीन को काउंटर करने के लिए लद्दाख में तैनात किया गया है। इसी तरह, पानागढ़ स्थित 17 कोर, जो एकमात्र मौजूदा माउंटेन स्ट्राइक कोर है, उसे भी पूर्वोत्तर में तिब्बत-चीन सीमा पर तैनात किया गया है। हालांकि, 2021 तक केवल 17 एमएससी चीन पर केंद्रित रही और बाकी तीन कॉर्प्स का फोकस पाकिस्तान पर रहा।

महाराष्ट्र सरकार ने देसी गाय को राज्यमाता का दर्जा दिया

ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य, चुनाव से पहले शिंदे सरकार का फैसला

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे सरकार ने देसी गाय को राज्यमाता का दर्जा दिया है। ऐसा करने वाला महाराष्ट्र देश का पहला राज्य है। सोमवार को कैबिनेट बैठक में सरकार ने ये फैसला लिया। महायुति सरकार ने इसको लेकर अधिसूचना जारी कर दी है। शिंदे ने कहा कि स्वदेशी गायें हमारे किसानों के लिए वरदान हैं। इसलिए हमने इन्हें राज्य माता का दर्जा देने का फैसला लिया है। इसके साथ ही हम गोशालाओं में स्वदेशी गायों के पालन-पोषण के 50 रुपए प्रतिदिन की सब्सिडी योजना लागू करने जा रहे हैं। गोशालाएं अपनी कम आय के चलते यह खर्च नहीं उठा सकती थीं, इसलिए यह फैसला लिया गया है। सरकार ने कहा भारतीय संस्कृति में देसी गाय के महत्व को देखते हुए फैसला लिया नोटिफिकेशन में सरकार ने कहा कि वैदिक काल से भारतीय संस्कृति में देसी गाय के महत्व, मानव आहार में देसी गाय के दूध की उपयोगिता, आयुर्वेद चिकित्सा, पंचगव्य उपचार पद्धति और जैविक कृषि प्रणालियों में देसी गाय के गोबर और गोमूत्र के अहम स्थान को देखते हुए देसी गाय को राज्यमाता गोमाता घोषित करने की मंजूरी दी गई है।

महाराष्ट्र में 26 नवंबर के पहले होंगे विधानसभा चुनाव मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने शनिवार (28 सितंबर) को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर को समाप्त हो रहा है। इसके पहले चुनाव की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी। तारीखों का ऐलान अगले महीने होने की उम्मीद है।

सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल और आतिशी के खिलाफ मानहानि केस में कार्यवाही पर रोक लगाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अंतरिम आदेश जारी कर दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ चल रहे आपराधिक मानहानि केस की कार्यवाही पर रोक लगा दी है। केजरीवाल ने 8 दिसंबर 2018 को एक ट्वीट कर भाजपा पर अग्रवाल समाज के वोट काटने का आरोप लगाया था, जिसके बाद भाजपा नेता राजीव बब्बर ने केजरीवाल और आप नेताओं के खिलाफ मानहानि का केस किया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में दिल्ली पुलिस और शिकायतकर्ता भाजपा नेता राजीव बब्बर को नोटिस जारी किया है और उनसे जवाब मांगा है।

मिथुन चक्रवर्ती 8 अक्टूबर को दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित होंगे

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने घोषणा की कि इस साल का दादा साहेब फाल्के अवार्ड मिथुन चक्रवर्ती को दिया जाएगा। उन्हें यह सम्मान 8 अक्टूबर को 70वीं नेशनल फिल्म अवॉर्ड सेरेमनी में दिया जाएगा। मिथुन ने अपना फिल्मी कैरियर 1976 में मृगया से शुरू किया था। उन्होंने पहली ही फिल्म में नेशनल अवॉर्ड जीता था। करीब 5 दशक के अपने फिल्मी कैरियर में मिथुन ने बांग्ला, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, ओडिया और भोजपुरी की साढ़े 3 सौ से ज्यादा फिल्मों में काम किया है। उन्हें युवा फिल्म दर्शकों के बीच 1982 में आई डिस्को डांसर से पहचान मिली। वे अब तक 350 से ज्यादा फिल्मों में एक्टिंग कर चुके हैं। उन्हें 3 बार नेशनल अवॉर्ड मिला है। इसी साल जनवरी में उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया था। यह सम्मान मिलने पर मिथुन चक्रवर्ती ने कहा कि सच कहूं तो, मेरे पास कोई भाषा ही नहीं है। न मैं हंस सकता हूं, न मैं खुशी से रो सकता हूं। इतनी बड़ी चीज है। जहां से मैं आया हूं, उस लड़के को इतना बड़ा सम्मान मिला है, मैं सोच भी नहीं सकता। मैं ये अपने परिवार और दुनियाभर के चाहने वालों को डेडिकेट करता हूं। 16 जून 1950 को मिथुन चक्रवर्ती का जन्म कोलकाता में हुआ था और उनका असली नाम गौरांग चक्रवर्ती है। मिथुन ने केमिस्ट्री में ग्रेजुएशन किया है। इसके बाद वे नक्सली आंदोलन से जुड़ गए और घर से दूर हो गए।

संपादकीय

विदेश में भारतीय प्रवासियों की चुनौतियाँ और योगदान

अमेरिका में प्रवासी भारतीय समुदाय वहां की सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में जिस तरह से क्रियाशील हैं। उसके बाद से वहां के राजनेताओं का झुकाव भारतीय समुदाय के साथ अपने रिश्ते को मजबूत बनाने मे हुआ है। पिछले कुछ वर्षों मे राष्ट्रपति चुनाव से लेकर स्थानीय चुनाव में भारतीयों की भूमिका महत्वपूर्ण हुई है। हाल ही के राष्ट्रपति चुनाव मे कमला हैरिस और डोनाल्ड ट्रंप दोनों ही, भारतीय समुदाय के समर्थन के लिए एड़ी चोटी का पसीना बहा रहे हैं। वहीं अमेरिका के नस्लवाद और कट्टर धार्मिक चरमपंथियों के कारण प्रवासी भारतीयों को चुनौती का सामना भी करना पड़ रहा है। अमेरिका में बसे भारतीय प्रवासियों की संख्या पिछले कुछ दशकों में तेजी से बढ़ी है। 2010 से 2020 के बीच की अवधि में प्रवासी भारतीयों की संख्या एरिजोना में 74त्न और जॉर्जिया में 67त्न तक बढ़ गई है। प्रवासी भारतीयों की व्यापक उपस्थिति, बढ़ती राजनीतिक एवं आर्थिक शक्ति को दर्शाती है। इस बदलाव के कारण अमेरिका में प्रवासी भारतीयों को चुनौती भी मिलना शुरू हो गई है। इसका संतुलन किस तरह से बनेगा, इसको लेकर भारतीयों मे चिंता भी बढ़ गई है। भारतीय प्रवासियों का अमेरिका के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। 20वीं सदी के प्रारंभ से भारतीयों ने अमेरिका और अन्य देशों मे जाकर व्यापार और नौकरी करना शुरू कर दिया था। 1913 में पहला ग़दर आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनकर, प्रवासियों की स्थिति को मजबूत बनाया है। समय के साथ, भारतीय प्रवासी न केवल आर्थिक रूप से विदेशों में सशक्त हुए। अमेरिका और अन्य देशों मैं भारतीय प्रवासियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान भी बनाई। वर्तमान में, भारतीय प्रवासी समाज कई देशों में वहां की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। भारत से बाहर रहकर भी वह अपनी मातृभूमि के साथ पारिवारिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों के कारण मजबूती के साथ जुड़े हुए हैं। विदेश में रहते हुए उन्होंने आर्थिक, शैक्षणिक, और तकनीकी क्षेत्र में वहां पर भागीदारी करते हुए, भारत के विकास में बड़ा योगदान दिया है। बड़ी संख्या में भारतीय प्रवासी अमेरिकी मे आईटी, उद्योग, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। जिससे दोनों देशों के बीच सहयोग भी बढ़ा है। इन दिनों सारी दुनिया के देशों में जिस तरह से नस्लवाद, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आधार पर संघर्ष, अप्रवासन नीतियों में आए बदलावों ने प्रवासियों के जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। ट्रंप प्रशासन के दौरान कठोर अप्रवासन नीतियों ने भारतीय प्रवासियों के लिए नई चुनौतियाँ खड़ी की थीं। विशेष रूप से, एच1-बी वीज़ा और ग्रीन कार्ड जैसी प्रक्रियाओं में कड़े नियम प्रवासी भारतीयों के लिए मुश्किल बन गये थे। इन सबके बावजूद, भारतीय प्रवासियों ने अमेरिका में हर चुनौती का सामना करते हुये नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। प्रवासी भारतीयों की सफलता केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है। प्रवासी भारतीयों ने दोनों देशों के बीच में संबंधों को बढ़ाने में भी विशेष योगदान दिया है। भारत और अमेरिका के बीच में प्रवासियों ने एक सेतु के रूप में काम करते हुए, वहां पर अपनी स्थिति को मजबूत बनाया है। अमेरिका में बसे भारतीय प्रवासी भारत और अमेरिका की आर्थिक समृद्धि और विकास का प्रतीक बन गये हैं। उनकी भूमिका वैश्विक स्तर पर भारत की छवि को मजबूती प्रदान करती है। हाल ही में अमेरिका में हो रहे राष्ट्रपति चुनाव को लेकर जिस तरह से भारतीय समुदाय ने दोनों ही राजनीतिक दलों के साथ समन्वय बनाया। वह राजनीतिक तौर पर प्रवासी भारतीयों की स्थिति को मजबूत बनाते हुए, वहां की राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों में योगदान सराहनीय है। हाल ही में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अमेरिका की यात्रा की थी। उन्होंने भी वहां की राजनीति में भारतीय समुदाय को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अमेरिका की यात्रा पर गए।

दवा कारोबार की अनैतिकता से बढ़ता जीवन संकट

ललित गर्ग

केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) ने दवाइयों के क्वालिटी टेस्ट में 53 दवाओं को फेल कर दिया गया है। उनमें कई दवाओं की क्वालिटी खराब है तो वहीं दूसरी ओर बहुत सी दवाएं नकली भी बिक रही हैं। इन दवाओं में बीपी, डायबिटीज, एसिड रिफलक्स और विटामिन की कुछ दवाइयां भी शामिल हैं। इसके अलावा सीडीएससीओ ने जिन दवाओं को गुणवत्ता में फेल किया हैं उसमें बुखार उतारने वाली पैरासिटामोल, पेन किलर डिक्लोफेनेक, एंटीफंगल मेडिसिन फ्लुकोनाजोल जैसी देश की कई बड़ी फार्मास्युटिक्लस कंपनी की दवाएं भी शामिल हैं और इनको सेहत के लिए नुकसानदायक भी बताया गया है। निश्चित ही यह खबर परेशानी एवं चिन्ता में डालने वाली है। कैसी विडंबना है कि काफी समय से सरकारों की नाक के नीचे ये दवाइयां धड़ल्ले से बिकती रही हैं। गुणवत्ता के मानकों पर खरा न उतरने वाली दवाओं की सूची जारी होने से उन मरीजों की स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गयी हैं जो इन दवाओं का इस्तेमाल कर रहे थे। दुर्भाग्य से इस सूची में हाइपरटेंशन, डाइबिटीज, कैल्शियम सप्लीमेंट्स, विटामिन-डी3 सप्लीमेंट्स, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, विटामिन-सी, एंटी-एसिड, एंटी फंगल, सांस की बीमारी रोकने वाली दवाएं भी शामिल हैं। इसमें दौरे व एंग्जाइटी का उपचार करने वाली दवाएं भी शामिल हैं। ये दवाएं बड़ी कंपनियों द्वारा भी उत्पादित हैं।

रोगी इस उम्मीद में दवा लेते हैं कि इससे उनकी बीमारी ठीक होगी। लेकिन यह पता लगे कि जिन दवाइयों का वे सेवन कर रहे हैं वे दवा नहीं बल्कि जहर के रूप में बाजार में आ गई हैं तो क्या बीतेगी? हिंदुस्तान में आज लाखों लोगों को ये दवाएं जीवन-रक्षा नहीं दे रही है बल्कि मार रही है, इंसान का लोभ एवं लालच इंसान को मार रहा है। ऐसे स्वार्थी लोगों एवं जीवन से खिलवाड़ करने वालों को राक्षस, असुर या दैत्य कहा गया है जो समाज एवं राष्ट्र में तरह-तरह से स्वास्थ्य सुरक्षा के नाम पर मौत बांट रहे हैं। अमानक एवं गुणवत्ता में दोषपूर्ण पाई गई इन दवाओं में कई नामी कंपनियों की दवाएं भी शामिल हैं। अमानक पाई गई दवाइयों के ये मामले तो तब आए हैं जब पहले से ही दवाओं की गुणवत्ता तय करने के लिए कई सख्त प्रक्रियाएं होती हैं। इनमें कच्चे माल की जांच और निर्माण प्रक्रिया का निरीक्षण तक शामिल होता है। इसके बावजूद नामी दवा निर्माता कंपनियों के उत्पाद भी मानकों पर खरे नहीं उतरें तो यह माना जाना चाहिए कि कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में ये कंपनियां नैतिकता एवं मानवीयता को ताक पर रखने लगी है। यह कोई पहला मौका नहीं है जब दवाइयां गुणवत्ता के पैमानों पर खरी नहीं उतरी हैं।

आम लोगों के मन में सवाल बाकी है कि यदि ये दवाएं मानकों पर खरी नहीं उतरती तो इनके नकारात्मक प्रभाव किस हद तक हमारी सेहत को प्रभावित करते हैं। यह भी कि जो लोग घटिया दवाइयां बेच रहे थे क्या उनके खिलाफ कोई कार्रवाई की पहल भी हुई है? फिलहाल इस बाबत कोई जानकारी आधिकारिक रूप से सामने नहीं आई है। निस्संदेह, यह शर्मनाक है और तंत्र की विफलता को उजागर करता है कि शारीरिक कष्टों से मुक्त होने के लिये लोग जो दवाएं खरीदते हैं, वे घटिया हैं? बहुत संभव है ऐसी घटिया दवाओं के नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते होंगे। इस बाबत गंभीर शोध-अनुसंधान की जरूरत है। चिंता यह भी कि यदि रैंडम सैम्पलिंग में ये दवाइयां पकड़ी नहीं जाएं तो इनकी खुलेआम बिक्री लोगों की सेहत पर खतरा बन कर मंडराती रहती हैं। एक तरफ सीडीएससीओ ने दवाओं की सुगम आपूर्ति के लिए अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, कनाडा व यूरोपीय संघ के कुछ चुनिंदा देशों से आयातित दवाओं को नियमित नमूना परीक्षण से छूट दी है, वहीं देश के बाजारों में पहुंची दवा निर्माता कंपनियों की दवाओं में मिलने वाली यह खोट हमारी छवि पर विपरीत असर डालने वाली है।

दवा परीक्षण में किसी भी स्तर पर लापरवाही अक्षम्य ही है क्योंकि दवा कारोबार में हेराफेरी का खेल लोगों की जान का दुश्मन बन सकता है। विडंबना देखिए कि ताकतवर और धनाढ्य वर्ग द्वारा संचालित इन दवा कंपनियों पर राज्य सरकारें भी जल्दी हाथ डालने से कतराती हैं। जिसकी कीमत आम लोगों को ही चुकानी पड़ती है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि मानवीय मूल्यों में इस हद तक गिरावट आई है कि लोग अपने मुनाफे के लिये पीड़ित मरीजों के जीवन से खिलवाड़ करने से भी नहीं चूक रहे हैं। व्यथित करने वाली बात है कि गुणवत्ता एवं मानक में फेल होने वाली दवाओं में पेट में इंफेक्शन रोकने वाली एक चर्चित दवा भी शामिल है। उल्लेखनीय है कि इसी साल अगस्त में केंद्र सरकार ने 156 फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन यानी एफडीसी दवाओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था। दरअसल, ये दवाइयां आमतौर पर सर्दी व बुखार, दर्द निवारक, मल्टी विटामिन और एंटीबायोटिक्स के रूप में इस्तेमाल की जा रही थी। मरीजों के लिये नुकसानदायक होने की आशंका में इन दवाइयों के उत्पादन, वितरण व उपयोग पर रोक लगा दी गई थी। सरकार ने यह फैसला दवा टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड की सिफारिश पर लिया था। जिसका मानना था कि इन दवाओं में शामिल अवयवों की चिकित्सकीय गुणवत्ता संदिग्ध है। दरअसल, एक ही गोली को कई दवाओं से मिलाकर बनाने को फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन ड्रग्स यानी एफडीसी कहा जाता है। बहरहाल, सामान्य रोगों में उपयोग की जाने वाली तथा जीवनरक्षक दवाओं की गुणवत्ता में कमी का पाया जाना, मरीजों के जीवन से खिलवाड़ ही है। जिसके लिये नियामक विभागों की जवाबदेही तय करके घटिया दवा बेचने वाले दोषियों को कठोर दंड दिया जाना चाहिए। असल में इस तरह की दानवी सोच वाले लोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। ऐसे लोग धन-संपत्ति आदि के जरिए सिर्फ अपना ही उत्थान करना चाहते हैं, भले ही इस कारण दूसरे लोगों और पूरे समाज ही मौत के मुंह में जा रहे हो, यह मानवीय संवेदनाओं के छीजने की चरम पराकाष्ठा है। यह कैसी विडम्बना एवं विसंगतिपूर्ण दौर है जिसमें जिसको जहां मौका मिल रहा है, वह लूटने में लग हुआ है, यहाँ कोई भी व्यक्ति सिर्फ तब तक ही ईमानदार है जबतक उसको चोरी करने का या लूटने का मौका नहीं मिलता। हद तो तब है जब कई जगह जीवनरक्षक इंजेक्शनों की जगह नकली इंजेक्शन तैयार करने की खबरें भी आती रहती हैं। हम कितनें लालची एवं अमानवीय हो गये हैं, हमारी संवेदनाओं का स्रोत सूख गया है, तभी अपना ईमान बेच कर इंजेक्शन में पैरासिटामोल मिलाकर बेचने लगते हैं, हम तो अपनी तिजोरियां भरने के लिए जिंदा इंसानों को ही नोच रहे हैं, कहाँ लेकर जाएंगे ऐसी दौलत या फिर किसके लिए? यह कैसी मानवीयता है?

दवाओं की गुणवत्ता से खिलवाड़ दवा निर्माता कम्पनियों का एक घिनौना, क्रूर एवं अमानवीय चेहरा ही है जो मनुष्य के स्वास्थ्य को चौपट कर रहे हैं। एक तो बीमारियों का कोई कारगर इलाज नहीं है, दूसरा इन बीमारी में काम आने वाली तमाम जरूरी दवाइयां लालची लोगों ने अमानक एवं दोषपूर्ण कर दी हैं। बढ़ती बीमारियां इन राक्षसों के कारण ही बेकाबू हो रही है। सरकारें इन त्रासद स्थितियों एवं बीमारी पर नियंत्रण पाने में नाकाम साबित हुई है। देश के लाखों लोग कातर निगाहों से शासन-प्रशासन की ओर देख रहे हैं कि कोई तो राह निकले। सरकार का व्यवस्था पर नियंत्रण कमजोर होता दिख रहा है। आम आदमी जाए तो कहां जाये? विश्व को श्रेष्ठ, नैतिक एवं मानवीय बनने का उपदेश देने वाला देश आज कहां खड़ा है? आज इन मूल्यों एवं संवेदनाओं की दृष्टि से देश कितना खोखला एवं जर्जर हो गया है। आज भौतिक एवं स्वार्थी मूल्य अपनी जड़ें इतनी गहरी जमा चुके हैं कि उन्हें निर्मूल करना आसान नहीं है। मनुष्य का संपूर्ण कर्म प्रदूषित हो गया है। सारे छोटे-बड़े धंधों में अनीति प्रवेश कर गई है। अमानक दवाओं का बढ़ता बाजार एक कलंक बनकर उभरा है। निस्संदेह यह संकट जल्दी समाप्त होने वाला नहीं है। ऐसे में सरकारों को दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखकर रणनीति बनानी होगी।

2047 का भारत टैक्सटाइल इंडस्ट्री में आगे होगा- लालवानी

इंदौर। भारत में टैक्सटाइल इंडस्ट्री का भविष्य बहुत ही अच्छा है। 2047 का भारत टैक्सटाइल इंडस्ट्री में सबसे आगे होगा। ये विचार सांसद शंकर लालवानी के है, जो उन्होंने द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंदौर लोकल द्वारा टैक्सटाइल इंडस्ट्री पर आयोजित दो दिवसीय 37वें नेशनल कंवेंशन ऑफ टैक्स टाइल इंजीनियर्स नेशनल सेमिनार का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि बतौर कहे। आयोजन ब्रिलियंट कंवेशन सेंटर पर हुआ। श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के डायरेक्टर डॉ. उपिन्द ‍धर ने कहा कि टैक्सटाइल इंडस्ट्री में जितना कम वेस्ट निकलेगा उतना ही अच्छा होगा। साथ ही वह सस्टेनेबल भी हो। टैक्सटाइल डिविजन बोर्ड की चेयरपर्सन डॉ. जी. थिलगावथी ,कोयमबटु ने डाटा बेस प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज जरूरत है एक जिम्मेदार टैक्सटाइल इंडस्ट्री की, जिसमें कम से कम कार्बन उत्सर्जन हो। नेशनल कंवेशन के कंवेनर इंजी. आर पी. गौतम ने आयोजन की थीम पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि टैक्सटाइल इंडस्ट्री जब तक सस्टेनेबल, तकनीक से पूर्ण और लाभप्रद नहीं होंगी तब तक वह लम्बे समय तक टिकेगी नहीं।

पुरानी कपड़ा मिलों के बंद होने का कारण उसका आधुनिकीकरण नहीं होना।सस्टेनेबल नहीं होना, समय के अनुसार बदलाव नहीं होना और लाभप्रद नहीं होना। इस मौके पर संस्था का एक प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मिला और उनसे टैक्सटाइल इंडस्ट्री के डेवलपमेंट पर बातचीत की। इस मौके पर महा पौर पुष्य मित्र भार्गव, इंजिनियर विवेक तिवारी, अध्यक्ष दिनेश शुक्ला, इंजी. आर पी गौतम विशेष रूप से उपस्थित थे। डीआरडीओ के असिस्टेंट डायरेक्टर और वैज्ञानिक डॉ. विकास ठाकरे ने कहा कि डी आरडीओ में जो नए नये इन्वेंशन और पेटेंट हो रहे है उसकी जानकारी डीआरडीओ की साइट पर उपलब्ध है। डॉ. प्रभाकर भट्ट ने स्टेट ऑफ द आर्ट पर बोलते हैं कहा कि पुराने कपड़ो की रि साइक्लिंग में भी सस्टेनब्लिट जरूरी है। स्वागत भाषण अध्यक्ष दिनेश शुक्ला ने दिया। नेशनल कंवेन्शन में इंजिनियर, इंडस्ट्री से जुड़े लोग, शिक्षाविद, रिसर्च स्कालर सहित 126 प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अतिथियों ने कनवेंशन पर आधारित सोवेनियर का विमोचन किया। इस मौके पर आई आई टी के अपूर्व दास, डॉ. प्रभाकर भट्ट और बिवेक बंदोपाध्याय को एमिनेंट इंजिनियर अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया अतिथि स्वागत अध्यक्ष दिनेश शुक्ला,सचिव रमेश एस चौहान, इंजी. अजय शंकर जोशी, आर पी गौतम ने किया।

नगर निगम पर बिजली कंपनी का बकाया पहुंचा 25 करोड़ के करीब

इंदौर। कंगाली के दौर से गुजर रहा नगर निगम कई विभागों को बकाया नहीं चुका पा रहा है। इसमें सबसे ज्यादा बकाया पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी का बताया जा रहा है। कई महीनो से बकाया होने के बाद भी नगर निगम ने अब तक बिजली कंपनी को बकाया देने की कोई योजना नहीं बनाई है। निगम अधिकारी हर महीने सरकार द्वारा चुंगी का पैसा काटने का बहाना बनाकर ठेकेदारों को भी पेमेंट करने से बचते हैं। बात की जाए बिजली कंपनी की तो बताया जा रहा है कि करीब 25 करोड़ रूपया बिजली कंपनी का निगम पर बकाया है।

जानकारी अनुसार बिजली कंपनी के भारी भरकम बिल से निजात पानी निगम सोलर पैनल के उपयोग पर भी जोर दे रहा है। जलूद के पंपिंग स्टेशन को भी सोलर पैनल से संचालित करने की योजना है। इसके लिए पैनल स्थापित करने का काम शुरू किया जा रहा है। पैनल लगने से जलूद में खर्च होने वाली बिजली से निगम को राहत मिलेगी। आगामी दिनों में चौराहों के आगामी दिनों में चौराहों के साथ कार्यालयों में सोलर पैनल लगाए जाएंगे। इस पर मंथन चल रहा है। बता दें, बिजली कंपनी का बिल कई महीनों से निगम में ड्यू, लेकिन फंड के अभाव में निगम बिल का भुगतान नहीं कर रहा है। अब बिजली कंपनी नगरीय प्रशासन विभाग से बिल की राशि जमा करने का आग्रह करेगी। बता दें, अन्य शासकीय विभागों पर बिजली कंपनी के करोड़ों रुपए जमा हैं।

राऊ विधायक मधु वर्मा की जान बचाने वाले पीएसओ को सीएम ने किया सम्मानित

इंदौर। राऊ विधायक मधु वर्मा के पीएसओ ने हार्ट अटैक के समय तत्काल सीपीआर देकर विधायक की जान बचाई। इस सराहनीय कार्य के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पीएसओ को 50,000 रुपए का रिवॉर्ड और आउट ऑफ टर्न प्रमोशन देने का निर्णय लिया। सीएम ने कहा कि इस तरह की तत्परता और साहसिकता का सम्मान होना चाहिए, जो न केवल विधायक बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणादायक है। विधायक ने पीएसओ के प्रयासों की सराहना की और उन्हें बधाई दी।

नवरात्रि में युवतियां गरबे में पहने शालीनता भरे कपड़े

इंदौर। शारदीय नवरात्रि शुरू होने वाली है। शहर भर के गरबा पांडाल और मंदिरों में देवी मां की भक्ति के लिए विभिन्न कार्यक्रम होते हैं। साथ ही विभिन्न पांडालों और मंदिरों में गरबा रास भी किया जाता है। माताजी की भक्ति और उपासना में किए जाने वाले गरबे में युवतियां शालीनता भरे वस्त्र पहनें। इससे और सामाजिक तत्वों को भी अवसर नहीं मिलेंगे। यहां अपील अखिल भारतीय हरियाणा गौड़ ब्राह्मण महासभा के मध्य प्रदेश के आईटी सेल प्रभारी आयुष शर्मा ने समाजजनों से की है। शर्मा ने अपील की है कि नवरात्रि माताजी की भक्ति का पर्व है। इसमें सिर्फ भक्ति ही की जाए।

करीब एक दर्जन छुट्टियों से भरपूर होगा अक्टूबर

एक दिन छुट्टी लेकर भी 4 दिन अवकाश हो सकता है कर्मचारियों का

इंदौर। अगला महीना यानी कि अक्टूबर सरकारी कर्मचारियों के लिए छुट्टियों से भरा होगा। इस महीने कुल मिलाकर करीब एक दर्जन छुट्टियां है। वही एक दिन की छुट्टी लेकर लगातार चार दिन तक अवकाश भी मनाया जा सकता है। कहने का मतलब है कि सरकारी कार्यालय में करीब 20 दिन कार्य होगा वही कोषालय की बात की जाए तो इनमें भी करीब एक सप्ताह तक अवकाश रहेगा। अक्टूबर में शुरुआत ही छुट्टी से होगी। नवरात्रि, दशहरा, फिर करवा चौथ और अंत में पांच दिनों दीपों का पर्व दीपावली रहेगा। इसलिए त्यौहारों की वजह से कई सार्वजनिक और ऐच्छिक सरकारी छुट्टियां रहेंगी। 18 अक्टूबर का अवकाश लेकर 4 दिन की लगातार छुट्टी मना सकते हैं, क्योंकि 17 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती की छुट्टी है। 19 और 20 को शनिवार-रविवार का अवकाश है।

जानकारी अनुसार महीने के पहले दिन एक अक्टूबर से ही छुट्टियों की शुरुआत हो जाएगी। इस दिन प्राणनात जयंती होने से शासन ने ऐच्छिक अवकाश घोषित किया है। दो अक्टूबर को गांधी जयंती का सार्वजनिक अवकाश है। 3 को महाराज अग्रसेन जयंती है। यह भी ऐच्छिक अवकाश है। 12 अक्टूबर को दशहरा है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहेगा। 17 अक्टूबर को महाराज अजमेढ़ देव जयंती और टेकचंद महाराज के समाधि उत्सव, 20 को करवा चौथ, 23 को बोहरा समाज के धर्मगुरु डॉक्टर सैयदना साहब का जन्मदिन है। इनमें भी ऐच्छिक अवकाश रहेगा। त्योहारों के चलते बैंकों में 2 अक्टूबर को गांधी जयंती, 6 अक्टूबर को रविवार, 12 को दशहरा, दूसरे दिन शनिवार-रविवार का अवकाश रहेगा। 26 को माह के चौथे शनिवार, शनिवार 27 को रविवार और 31 अक्टूबर की दीपावली के कारण बैंक बंद रहेंगे।

सरकारी स्कूलों से बच्चों का मोह भंग, चालू सत्र में 7 लाख स्टूडेंट्स कम

भोपाल। *प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए कई प्रयास हो रहे हैं। लेकिन, स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ नहीं रही। पिछले साल के मुकाबले इस साल करीब 7 लाख स्टूडेंट्स ने कम प्रवेश लिया। प्रदेश में 5500 स्कूल ऐसे हैं, जिसमें पहली कक्षा में एक भी स्टूडेंट ने प्रवेश नहीं लिया। 25 हजार में दो स्टूडेंट का प्रवेश हुआ है। नई शिक्षा नीति के अनुसार इसमें कई बदलाव किए गए हैं।*

सरकारी स्कूलों में निशुल्क किताबें, गणवेश और मध्याह्न भोजन जैसी सुविधाएं देने के साथ ही नामांकन बढ़ाने के लिए स्कूल चलें हम और गृह संपर्क अभियान भी चलाया गया। इसके लिए मंत्री व जनप्रतिनिधियों से लेकर अधिकारी तक मैदान में उतरे, लेकिन पालकों का भरोसा नहीं जीत पाए। अक्टूबर तक सरकारी स्कूलों में पहली से 8वीं कक्षा तक में प्रवेश की प्रक्रिया होगी। अभी तक इस सत्र में पहली से 8वीं तक में 56 लाख विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। जबकि, पिछले वर्ष 63 लाख प्रवेश हुए थे। साढ़े पांच हजार स्कूल ऐसे हैं, जिसमें पहली कक्षा में एक भी विद्यार्थी ने प्रवेश नहीं लिया। 25 हजार स्कूलों में केवल दो बच्चों का प्रवेश हुआ है। 11 हजार स्कूल ऐसे हैं, जहां 10-10 बच्चों ने प्रवेश लिया है। यह खुलासा राज्य शिक्षा केंद्र के पोर्टल पर अपलोड नामांकन के आंकड़ों से हुआ है।

प्रदेश में करीब 78 हजार प्राथमिक स्कूल हैं। स्कूल शिक्षा विभाग के पोर्टल पर नामांकन के जारी आंकड़ों के अनुसार साल दर साल सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या कम हो रही है। हालांकि राज्य शिक्षा केंद्र ने जिला परियोजना समन्वयकों को निर्देश जारी कर बच्चों का नामांकन बढ़ाने के लिए गृह संपर्क अभियान जारी करने और समग्र आइडी से मैपिंग करने के निर्देश दिए हैं।

355 स्कूलों में कोई बच्चा नहीं, शिक्षक मौजूद

राज्य शिक्षा केंद्र की ओर से हाल ही में जारी आंकड़े के अनुसार प्रदेश के 38 जिलों में 355 स्कूल ऐसे हैं जहां शिक्षक तो हैं पर बच्चे नहीं हैं। अब ऐसे स्कूलों के शिक्षकों को दूसरे ऐसे स्कूलों में भेजा जा रहा है, जहां विद्यार्थियों के अनुपात में शिक्षकों की कमी है। इसमें भोपाल के तीन स्कूल शामिल हैं।

इस स्थिति को लेकर विभाग के तर्क

- *बच्चों का अपने माता-पिता के साथ दूसरी जगह जाना।*
- *समग्र आइडी से मैपिंग नहीं होने के कारण ऐसे हालात का बनना।*
- *जगह बदलने के कारण भी बच्चे ठीक से मैप नहीं हो पाते हैं।*

अभियान के जरिए नामांकन बढ़ाने की कोशिश

संचालक, राज्य शिक्षा केंद्र हरजिंदर सिंह ने कहा कि प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में बच्चों का नामांकन दर बढ़ाने के लिए गृह संपर्क अभियान जारी करने और समग्र आइडी से मैपिंग करने के निर्देश दिए हैं। जहां तक साढ़े पांच हजार स्कूलों में पहली कक्षा में जीरो प्रवेश होने की बात है, तो मैपिंग के बाद अगर शिक्षकों की संख्या ज्यादा पाई गई तो उन्हें दूसरे स्कूलों में भेजा जाएगा।

मध्यप्रदेश में पूर्व यौन अपराधियों की सघन जांच और प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की कवायद शुरू

24 घंटों में 4916 यौन अपराधियों से की गई पूछताछ... यौन हिंसा के प्रकरणों में रहेगा जीरो टॉलरेंस

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा प्रदेश में महिला एवं बाल सुरक्षा को सुनिश्चित करने तथा शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दिए गए निर्देशों के अनुक्रम में डीजीपी सुधीर सक्सेना द्वारा वीडियो कॉफ्रेंसिंग की गई।

जिसमें प्रदेश में यौन अपराधों की प्रभावी रोकथाम, यौन अपराधियों की सघन जांच और यौन अपराधियों को कड़ी सजा दिलाने के लिए प्रभावी कार्रवाई करने सभी पुलिस अधीक्षकों को निर्देशित किया गया। जिसके तारतम्य में पूरे प्रदेश में पुलिस द्वारा व्यापक अभियान के रूप में ऐसे अपराधियों को चिन्हित कर कार्रवाई प्रारंभ कर दी गई है। पुलिस पीआरओ आशीष शर्मा ने रविवार को जानकारी दी कि लैंगिक अपराधों में संलिप्त रहे लोगों के विरूद्ध अभियान चलाकर प्रदेश के सभी थाना क्षेत्रों में विगत दस वर्षों में इस तरह के अपराधों में लिप्त रहे लोगों की सघन जांच एवं निगरानी प्रारंभ कर दी गई है। पुलिस के विभिन्न डाटा बेस से यौन अपराधियों विशेषतः एक से अधिक बार इस तरह के अपराध को अंजाम देने वाले अपराधियों की जानकारी संकलित की गई है। साथ ही कम उम्र की नाबालिग बालिकाओं से बलात्कार में दोषी अपराधियों को भी चिन्हित किया जा रहा है। जो अपराधी अपना क्षेत्र छोड़कर अन्यत्र निवास कर रहे हैं, उनकी संबंधित पुलिस थाने को जानकारी देना सुनिश्चित किया जा रहा है ताकि उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा सके। उन्होंने बताया कि पूरे प्रदेश में लगभग 51052 यौन अपराधियों का डाटा बनाकर चिन्हित किया गया है। पिछले 24 घंटों में 2469 यौन अपराधियों के विरुद्ध प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई तथा 2447 यौन अपराधियों से पूछताछ कर उन्हें हिदायत दी गई। इस प्रकार एक दिन में लगभग 4916यौन अपराधियों से पुलिस द्वारा पूछताछ कर सख्त हिदायत दी गई है।

शर्मा ने बताया कि पूरे प्रदेश में पुलिस द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र में ऐसे अपराधियों की कोई भी गतिविधी व आचरण संदिग्ध या संदेहास्पद पाए जाने पर हिदायत दी जा रही है। अपराधियों को बॉउन्ड ओवर तथा विधि अनुसार अन्य कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है। वहीं, पुनरावृत्तिकर्ता अपराधियों की हिस्ट्रीशीट तैयार की जा रही है तथा आदतन अपराधियों पर विशेष नजर रखी जा रही है। इसके अलावा शासन की मंशानुसार पॉस्को एक्ट तथा अन्य यौन अपराधों संबंधित फास्ट ट्रेक कोर्ट में चल रहे मामलों के त्वरित निराकरण के लिए फॉलोअप लिया जा रहा है तथा डीपीओ और अन्य संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर पीड़ित को त्वरित न्याय तथा अपराधी को कड़ी सजा दिलाने के लिए प्रयास जारी हैं।

माँ के साथ शिक्षक की भी भूमिका निभाती हैं महिलाएँ : राज्य मंत्री गौर

भोपाल। प्रदेश की पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कृष्णा गौर ने कहा कि महिला अपने जीवन में दो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती है। एक शिक्षक के रूप में और एक माँ के रूप में। माँ के रूप में जहाँ वह अपने बच्चे का पालन पोषण करती है, वहीं बच्चों के पहले गुरु के रूप में प्रारंभिक शिक्षा और जीवन मूल्य सिखाने का काम भी करती है। इस प्रकार महिलाएँ दोनों रूपों में देश एवं समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। राज्य मंत्री कृष्णा गौर रविवार को डबरा के शिव गार्डन में आयोजित प्रांतीय महिला शिक्षक सम्मेलन के उदघाटन सत्र को संबोधित कर रहीं थीं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार हर समय महिला शिक्षकों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृतव में प्रदेश सरकार महिला सशक्तिकरण के लिये पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। महिला शिक्षकों के प्रांतीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मध्यप्रदेश शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष क्षत्रवीर सिंह राठौर ने की। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री इमरती देवी, नईदिल्ली से पधारीं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की सचिव एवं दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. गीता भट्ट एवं वरिष्ठ जनप्रतिनिधि लोकेन्द्र पाराशर बतौर विशिष्ट अतिथि मंचासीन थे। सम्मेलन में प्रदेश के विभिन्न जिलों से पधारीं महिला शिक्षकों ने भाग लिया।

पत्रकार निष्पक्ष खबर से समाज में अपनी विश्वसनीयता को मजबूत करें

मंत्री श्री विजयवर्गीय नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट के कार्यक्रम मे हुए शामिल

भोपाल। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि आज के दौर में पत्रकारिता के क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहा है। इस दौर में कई कारणों से पत्रकारों की निष्पक्षता पर सवाल खड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि बदलते दौर में भी पत्रकार अपनी निष्पक्ष खबरों से जनता में अपनी विश्वसनीयता और मजबूत कर सकते हैं। मंत्री श्री विजयवर्गीय आज भोपाल में नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट (इंडिया) की राष्ट्रीय पदाधिकारी बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर संगोष्ठी के माध्यम से 'मीडिया के बदलते परिदृश्य और चुनौतियों' के संबंध में विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम में पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री राधा सिंह एवं विधायक सिंगरौली रामनिवास शाह भी मौजूद थे।

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि लोकतंत्र के जरिये समाज में सभी को समान अधिकार मिले हैं। इस वजह से पत्रकारों के अधिकारों की भी सीमा है। उन्होंने कहा कि प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के साथ सोशल मीडिया का भी विस्तार हुआ है। इस विस्तार में खबरों की जिम्मेदारी को लेकर समाज में खतरे भी बढ़े हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि पत्रकार स्वयं अपने मानक तैयार कर समाज में आदर्श प्रस्तुत करें। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि देश की आजादी के बाद नवगठित सरकारों ने देश में तुष्टिकरण को बढ़ाया है। इससे समाज में असमानता का माहौल निर्मित हुआ। वर्ष 2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने देशहित में धारा 370 को समाप्त कर एक महत्वपूर्ण फैसला लिया। उन्होंने कहा कि संविधान के माध्यम से देश के प्रत्येक राज्य के नागरिकों को एक समान अधिकार दिये गये हैं। मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारत ने सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। इस वजह से दुनिया में भारत की साख मजबूत हुई है और भारत की आवाज को दुनिया पूरी गंभीरता से सुनती है। राज्य मंत्री राधा सिंह ने कहा कि क्षेत्रीय पत्रकारिता का अपना अलग महत्व है। क्षेत्रीय खबरों से ही राष्ट्रीय स्तर की खबरें बनती है। उन्होंने क्षेत्रीय पत्रकारों के लगातार प्रशिक्षण पर भी जोर दिया। कार्यक्रम को एनयूजे के राष्ट्रीय अध्यक्ष रासबिहारी, राष्ट्रीय महासचिव प्रदीप तिवारी, एब्सोल्यूट ग्राम्य के डॉ. पंकज शुक्ला, जोनल कोऑर्डिनेटर एवं मीडिया इंचार्ज डॉ. बी.के. रीना, एसओआर सुप्रीम कोर्ट अश्वनी दुबे ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी में देशभर के 13 राज्यों के प्रतिनिधि शामिल हुए।

किताब का विमोचन-नगरीय विकास मंत्री श्री विजयवर्गीय ने इस अवसर पर आर्टिकल 32 पर लिखित अश्विनी दुबे की पुस्तक का विमोचन किया।

भोपाल, इटारसी समेत कई स्टेशनों पर मिलेगी स्पेशल ट्रेन

त्यौहारों को लेकर रेल यात्रियों के लिए 22 ट्रेनों की सुविधा

भोपाल। *दिवाली पर घर जाना है। ट्रेनों में भीड़ है, तो स्पेशल ट्रेन में बुकिंग कर सकते हैं। मध्य प्रदेश के रेल यात्रियों के लिए पश्चिम मध्य रेलवे के भोपाल, इटारसी, जबलपुर, नरसिंहपुर, पिपरिया, कटनी, सतना, भोपाल, खंडवा, बीना आदि स्टेशनों से गुजरने वाली 22 ट्रेनों में बुकिंग कर सकते हैं। इसमें कुछ ट्रेनें भोपाल मंडल भी चला रहा है। यह सभी ट्रेनें देश के अलग अलग राज्यों के लिए मध्य प्रदेश के अनेक स्टेशनों से होते हुए जाएंगी। ट्रेनों की सही स्थिति जानने के लिए यात्री ऐप का इस्तेमाल कर सकते हैं इस ऐप पर ट्रेन का पूरा शेड्यूल मौजूद है। चलिए, इन ट्रेनों का शेड्यूल जानते हैं।*

पनवेल और छपरा एक्सप्रेस-05069 छपरा-पनवेल स्पेशल गाड़ी 30 नवंबर तक छपरा से प्रत्येक शनिवार को दोपहर 1.15 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रुकते हुए अगले रात 12ः00 पर पनवेल पहुंचेगी। 05070 पनवेल छपरा स्पेशल ट्रेन 1 दिसंबर 2024 तक पनवेल से प्रत्येक शनिवार को रात्रि 11ः20 पर खुलेगी और तीसरे दिन सुबह 11ः35 बजे छपरा पहुंचेगी। यह ट्रेन बलिया, गाजीपुर, औड़िहार, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, प्रयागराज छिवकी, मानिकपुर, सतना, कटनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, पिपरिया, इटारसी, भुसावल, नासिक रोड, इगतपुरी, कल्याण स्टेशन पर हॉल्ट लेगी।

पुणे-दानापुर-पुणे के मध्य स्पेशल ट्रेन-गाड़ी संख्या 01205 पुणे-दानापुर सुपर फास्ट स्पेशल ट्रेन 25 अक्टूबर से 7 नवंबर तक पुणे स्टेशन से 3.30 बजे प्रस्थान कर तीसरे दिन रात में 2 बजे दानापुर स्टेशन पहुंचेगी। 01206 दानापुर- पुणे स्पेशल ट्रेन 27 अक्टूबर से 9 नवंबर तक दानापुर स्टेशन से 5.30 बजे प्रस्थान कर अगले दिन शाम 6.15 बजे पुणे स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन दौंड कॉर्ड लाइन, अहमदनगर, कोपरगांव, मनमाड़, भुसावल, इटारसी, जबलपुर, कटनी, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर एवं आरा स्टेशनों पर रुकेगी।

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस- अगरतला स्पेशल ट्रेन-01065 छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस -अगरतला सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन 31 अक्टूबर एवं 7 नवंबर को प्रत्येक गुरुवार को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस स्टेशन से सुबह 11.05 बजे प्रस्थान कर चौथे दिन रविवार रात 1.10 बजे अगरतला स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार 01066 अगरतला- छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस स्पेशल ट्रेन 3 नवंबर एवं 10 नवंबर को प्रत्येक रविवार को अगरतला स्टेशन से दोपहर 3.10 बजे प्रस्थान कर चौथे दिन बुधवार को सुबह 3.50 बजे छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन में यह गाड़ी दोनों दिशाओं मुंबई दादर सेंट्रल, कल्याण जंक्शन, इगतपुरी, नासिक रोड, भुसावल जंक्शन, खंडवा, इटारसी जंक्शन, पिपरिया, जबलपुर, कटनी, सतना, प्रयागराज छिवकी जंक्शन, पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, हाजीपुर जंक्शन, बरौनी जंक्शन, बेगूसराय, खगडिया जंक्शन, नौगछिया, कटिहार जंक्शन, बरसोई जंक्शन, किशनगंज, अलुँबारी रोड, न्यू जलपाईगुड़ी, न्यू कूचबिहार, कोकराझार, न्यू बोंगाईगांव, रंगिया जंक्शन, कामाख्या, गुवाहाटी, चापरमुख जंक्शन, होजाई, पथरखोला, न्यू हाफलांग, बदरपुर जंक्शन, न्यू करीमगंज एवं धर्मनगर स्टेशनों पर रुकेगी।

जटिल ऑपरेशन में निश्चेतना की प्रगति से मिलेगी नई दिशा: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

निश्चेतना विशेषज्ञों के राज्य स्तरीय वार्षिक सम्मेलन का किया शुभारंभ

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि जटिल ऑपरेशन प्रक्रियाओं में निश्चेतना के क्षेत्र में हुई प्रगति अत्यंत कारगर साबित होगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने श्याम शाह चिकित्सा महाविद्यालय रीवा में राज्य स्तरीय निश्चेतना विशेषज्ञों के 38वें वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि इस आयोजन से प्राप्त ज्ञान न केवल चिकित्सा शोध में योगदान देगा, बल्कि मरीजों को उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सुविधाएं देने में भी मदद करेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह सम्मेलन रीवा सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के साथ प्रदेश के अन्य चिकित्सा संस्थानों के चिकित्सकों के लिए भी ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा। उन्होंने सम्मेलन को चिकित्सा क्षेत्र में मील का पत्थर बताया और देश-विदेश से आए विशेषज्ञों का स्वागत किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने स्मारिका का विमोचन भी किया और बाहर से आए निश्चेतना विशेषज्ञों का सम्मान किया।

डीन मेडिकल कॉलेज डॉ. सुनील अग्रवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम से रीवा के चिकित्सकों को निश्चेतना के क्षेत्र में हुई नई प्रगति, रोग प्रबंधन और दर्द को कम करने वाली पद्धतियों के बारे में जानकारी मिलेगी। कांफ्रेंस में रीवा के चिकित्सकों द्वारा इस कार्यशाला में शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण भी किया जाएगा, जिससे उनके शोध कार्यों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान मिलेगी।

सम्मेलन में देश-विदेश से आए 100 से अधिक निश्चेतना विशेषज्ञों शामिल हुए। सम्मेलन में क्रिटिकल केयर, वेंटिलेटर प्रबंधन और दर्द रहित चिकित्सा के विभिन्न आयामों पर चर्चा की जायेगी। अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. अरूण श्रीवास्तव, संजय गांधी अस्पताल के अधीक्षक राहुल मिश्रा, सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के अधीक्षक डॉ. अक्षय श्रीवास्तव सहित देश-विदेश से आए निश्चेतना विशेषज्ञ और चिकित्सक उपस्थित रहे।

करोड़ों में है इन बॉलीवुड स्टार्स के बाडीगार्ड्स की सैलरी

बॉलीवुड सेलेब्स की फैन फॉलोइंग जबरदस्त होती है। बी-टाउन सेलेब्स इवेंट्स से लेकर फिल्मी पार्टीज तक, अपने बिजी शिड्यूल में काफी कुछ मैनेज करते हैं। इसी बीच, एयरपोर्ट या और कहीं स्पॉट हो जाएं, तो फैंस इनकी झलक पाने के लिए कई बार हद भी पार करने को तैयार रहते हैं। ऐसे में सेलिब्रिटीज के साथ आपको उनके मैनेजर्स और बॉडीगार्ड हमेशा नजर आएंगे। बॉलीवुड सेलेब्स अपने मैनेजर्स और बॉडीगार्ड्स के साथ काफी अच्छा बॉन्ड भी शेयर करते हैं। शाहरुख खान से लेकर सलमान खान तक कई बॉलीवुड सेलेब्स ऐसे हैं, जिनके बॉडीगार्ड्स और मैनेजर्स सालों से उनके साथ हैं। ये सेलेब्रिटीज अपने बॉडीगार्ड्स को काफी अच्छी सैलरी भी देते हैं।

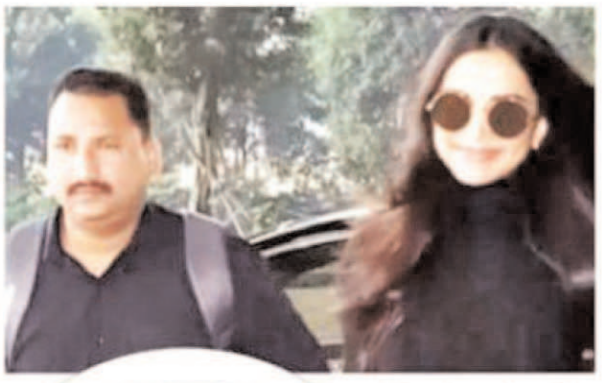

फैंस को अपने पसंदीदा सेलेब्स के बारे में जानना काफी अच्छा लगता है। ऐसे में चलिए आपको मिलवाते हैं बॉलीवुड सेलेब्स के बॉडीगार्ड्स से और बताते हैं उनकी सैलरी।

आलिया भट्ट

आलिया भट्ट के बॉडीगार्ड का नाम सुनील टालेकर है। सुनील भी काफी वक्त से आलिया के साथ हैं और एक्ट्रेस को प्रोटेक्ट करते हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो आलिया, उन्हें 50 लाख रुपये सैलरी देती हैं।

शाहरुख खान

किंग खान का दीवाना भला कौन नहीं है। शाहरुख खान की एक झलक फैंस को दीवाना बना देती है। एक्टर की मैनेजर पूजा डडलानी हैं, जो सालों से उनके साथ हैं। वहीं, शाहरुख खान के बॉडीगार्ड का नाम रवि सिंह है। रवि साये की तरह, शाहरुख के साथ रहते हैं और खबरों की मानें तो रवि की सालाना सैलरी लगभग 3 करोड़ रुपये है।

सलमान खान

सलमान खान के बॉडीगार्ड शेरा सालों से उनके साथ हैं और एक्टर के साथ हमेशा नजर आते हैं। शेरा का असली नाम गुरमीत सिंह है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, शेरा को साल के करीब 2 करोड़ मिलते हैं यानी सलमान खान बतौर फीस उन्हें हर महीने करीब 16 लाख रुपये देते हैं।

अमिताभ बच्चन

इंडस्ट्री के शहंशाह अमिताभ बच्चन के बॉडीगार्ड का नाम जितेंद्र शिंदे है। हालांकि, कई रिपोर्ट्स की मानें तो जितेंद्र, अब अमिताभ की सिक्योरिटी टीम में नहीं हैं। सालाना अमिताभ, जितेंद्र को 1.5 करोड़ रुपये सैलरी देते थे।

दीपिका पादुकोण

दीपिका पादुकोण के बॉडीगार्ड का नाम जलालुद्दीन शाह है। वह कई सालों से दीपिका के साथ हैं और दीपिका ने एक बार कपिल शर्मा शो में उन्हें सबसे मिलवाया भी था। फिल्म की शूटिंग, प्रमोशन और लगभग सभी इवेंट्स में जलाल, दीपिका के साथ नजर आते हैं। एक्ट्रेस उन्हें सालाना लगभग 1.2 करोड़ रुपये सैलरी देती हैं।

सोमी अली ने सोनू निगम पर लगाए गंभीर आरोप

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान की एक्स गर्लफ्रेंड सोमी अली सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। सोमी अली को लेकर अक्सर देखा जाता है कि वह सलमान खान पर भड़ास निकालती रहती हैं। बेबाक बयानों के लिए मशहूर एक्ट्रेस सोमी अली ने अब अपने लेटेस्ट वीडियो में सिंगर सोनू निगम पर निशाना साधा है। सोमी अली ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वीडियो शेयर कर कहा है कि सोनू निगम ने उन्हें मूर्ख बनाया है और उनका फायदा उठाया है। सोमी अली ने कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि वो इतना नीचे गिर जाएंगे। आइए जानते हैं सोमी अली ने सोनू निगम को लेकर और क्या कहा है- सोमी अली ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में उन्होंने कहा, करीब 3 साल पहले और हाल में भी ठगा गया। ये सीधी है या सीधा है, इसका फायदा उठाना हम सब इन चीजों से गुजर चुके हैं। मैं बताना चाहती हूं कि इन चीजों पर मेरा रिएक्शन कैसा होता है। कुछ साल पहले मैंने अपना टॉक शो शुरू किया था और इसमें कुछ लोगों के इंटरव्यू लिए। मैं उनका नाम नहीं लूंगी। वो शख्स जो टॉक शो मे था। वह बहुत समझदार लोगों की तरह बात करता है और बहुत ज्ञान बांटता है। मैं उससे प्रभावित हो गई। मुझे लगा कि वह जो उपदेश दे रहा है और उसको अपनी जिंदगी में फॉलो भी करता है। मैंने उसके फायदे के लिए उसे लंदन में कुछ प्रोजेक्ट्स दिलाने के लिए कॉन्टैक्ट किया लेकिन उसने मेरे मैसेज इग्नोर कर दिए। मुझे लगा कि वह मेरे शो में आने के लिए इच्छुक है। उसने कोई पैसा भी नहीं लिया क्योंकि उस समय हम टॉक शो के लिए पैसा देना अफोर्ड नहीं कर पा रहे थे।

अगर आपके बच्चे को पेशाब करने में परेशानी और जलन हो रही है तो उसके मूत्रवाहिनी मे इंफेक्शन हो सकता है। मूत्रवाहिनी संस्थान के इंफेक्शन को जानकर उनकी तुरंत चिकित्सा किया जाना महत्वपूर्ण होता है। चिकित्सा न किए जाने पर इससे बच्चों में गंभीर प्रकार के घातक गुर्दे के रोग हो सकते हैं।

बच्चों में मूत्ररोग

यह गुर्दों, मूत्रनलिका, मूत्रवाहिनी या मूत्राशय से मिलकर बने मूत्रवह संस्थान का एक या सारे भागों का इंफेक्शन होता है। इसके लक्षण अभिभावकों को स्पष्ट नहीं होते और छोटे बच्चे प्राय : इसका वर्णन करने में असमर्थ होते हैं।

मूत्रवाहिनी तंत्र

गुर्दे शरीर से रक्त प्रवाह में से छानकर पानी और मलांश निकालते हैं और मूत्रोत्पादन करते हैं। इससे प्रतिदिन प्रति वयस्क 1.5 से 2 लीटर और बच्चों में उनकी अवस्थानुसार उत्सर्जन होता है। मूत्र गुर्दों से पतली सी नलिका मूत्रवाहिनियों द्वारा नीचे तक जाता है। फिर गुब्बारे जैसे अवयव मूत्राशय में मूत्र एकत्रित होता है। इसके प्रत्येक वर्ष की आयु के अनुसार बच्चों में 1 से 1.5 कप मूत्र रुक सकता है। इस तरह 4 साल के बच्चे में एक कप से कम, 8 साल के बच्चे में 300 मिली लीटर मूत्र ठहर सकता है।

संकुचित होती पेशियां

मूत्राशय स्थल खाली होने के लिए स्फिक्टर रिफ्लेक्स के कारण पेशियां संकुचित होती हैं और मूत्र शरीर के बाहर यूरेथ्रा द्वारा निकल जाता है। यह मूत्राशय के नीचे होती है। यूरेथ्रा का मुख बच्चों में शिशन के अंतिम छोर और लड़कियों में योनी के सामने होता है।

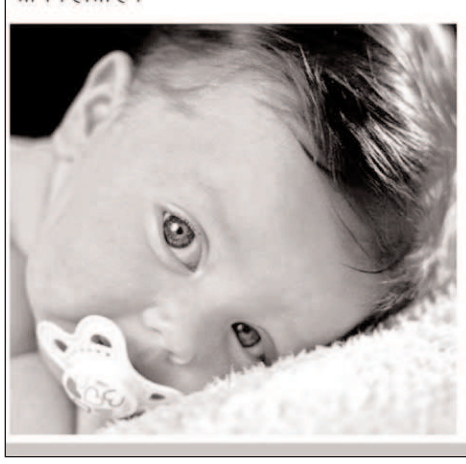

कैसे होता इंफेक्शन

साधारण मूत्र में कोई बैक्टिरिया (कीटाणु) नहीं होते। किन्तु गुदा और जननेन्द्रिय के चारों ओर की चमड़ी से यात्रा करके बैक्टीरिया यूरेथ्रा और मूत्राशय में चले जाते हैं। ऐसा होने पर ये बैक्टीरिया मूत्राशय में संक्रमण और सूजन पैदा करते हैं और इससे निचले पेट और साइड में दर्द और सूजन आ सकती है। इस प्रकार का मूत्राशय का इंफेक्शन सिस्टाइटिस कहलाता है। बैक्टीरिया मूत्र वाहिनी से यात्रा करके गुर्दों तक भी पहुंच जाते हैं और गुर्दों का इंफेक्शन उत्पन्न कर देते हैं। इसमें वेदना और बुखार होता है। मूत्राशय की अपेक्षा गुर्दे के इंफेक्शन गंभीर होते हैं।

असामान्य मूत्रवाहिनी

कुछ बच्चों में मूत्रवाहिनी इंफेक्शन का कारण असामान्य मूत्रवाहिनी होता है। इससे इनमें बार-बार इंफेक्शन होते रहते हैं, इसलिए, बच्चों में इंफेक्शन होने पर अतिरिक्त जांच की जरूरत होती है। कुछ बच्चों में यह इंफेक्शन उनकी प्रवृत्ति के कारण होता है, ठीक उसी प्रकार जैसे कुछ बच्चों में खांसी, जुकाम या कान के इंफेक्शन की प्रवृत्ति होती है या कभी बच्चे को विशेष बैक्टीरिया के कारण बार-बार इंफेक्शन होते रहते हैं।

इंफेक्शन के बुरे प्रभाव

छोटे बच्चों में मूत्रवाहिनी इंफेक्शन के कारण गुर्दे खराब होने का बड़ा खतरा रहता है।
कुछ क्षतियां है : गुर्दों का घात चिह्न, गुर्दों का अविकसित होना, गुर्दे का काम कम होना, ब्लड प्रेशर के अलावा और भी अन्य समस्याएं। इन्हीं कारणों से मूत्रवाहिनी इंफेक्शन होने पर तुरंत चिकित्सा और सावधानी जरूरी है।

मूत्रोत्सर्जन में बाधा

जो बच्चे बार-बार मूत्रोत्सर्जन नहीं करते, उनमें इसकी संभावना अधिक रहती है। मूत्र रोकने से बैक्टीरिया विकसित होते हैं। लंबी अवधि तक स्फिंक्टर पेशी को संकुचित रखने पर इसे विस्फरण में समय लगता है और मूत्रोत्सर्जन में बाधा होती है। इस कारण इन बच्चों का मूत्राशय पूरा खाली नहीं होता। इससे भी मूत्र के इंफेक्शन की तैयारी हो जाती है।

बीमारी के लक्षण

इस इंफेक्शन से मूत्राशय, यूरेथ्रा, मूत्रवाहिनी और गुर्दों की सतह पर उत्तेजना होती है। ठीक उसी प्रकार जैसे

जुकाम होने पर नाक के अंदर होती है। यदि आपका बच्चा कुछ साल का ही है तो मूत्रवाहिनी इंफेक्शन के लक्षण स्पष्ट नहीं हो सकते, क्योंकि वे नहीं बतला सकते कि उन्हें क्या महसूस हो रहा है। आपके बच्चे को तेज बुखार हो सकता है, वह चिड़चिड़ा हो सकता है और भोजन नहीं करता। दूसरी ओर कभी-कभी बच्चे को मामूली बुखार हो सकता है और मतली और वमन हो सकता है या सिर्फ सुस्त हो सकता है। यदि आपके बच्चे को तेज बुखार है या एक दिन से अधिक सुस्त हो और अन्य कोई लक्षण नहीं हो तो उसके मूत्राशय के इंफेक्शन की जांच करवाना चाहिए।

बीमारी की चिकित्सा

मूत्रवाहिनी इंफेक्शन की चिकित्सा के लिए बैक्टीरिया से लड़ने वाली दवा, जिसे एंटेबायोटिक्स कहते हैं, उपयोग की जाती है। मूत्र परीक्षण की रिपोर्ट आने तक संभावित बैक्टीरिया के लिए डॉक्टर दवा आरंभ कर देता है। जब बच्चा बीमारी के कारण या पेय लेने में असमर्थ होता है, तब दवा सीधे बाहों की शिरा से रक्तप्रवाह में दी जाती है। अन्यथा दवा या गोली मुख्यता शॉट में दी जाती है। कम से कम 3 से 5 दिन या संभवत : कई सप्ताह तक दी जाती है। उपचार की दैनिक मात्रा विशिष्ट दवा पर निर्भर होती है, यह दिन में चार बार भी दी जाती है। कुछेक बार आपके बच्चे को अन्य टेस्ट करवाने तक भी दवा चालू रखना पड़ सकता है। दवा की कुछ मात्रा मिलने के बाद बच्चा बेहतर लगने लगता है, किन्तु अक्सर पूरे लक्षण गायब होने पर दवा बंद न कर दें। दवा जल्दी बंद करने पर पुन : इंफेक्शन होकर और कीटाणु आगे की चिकित्सा में असंवेदनशील हो जाते हैं।

समस्या की विसंगतियां

यद्यपि कई बच्चों में मूत्रवाहिनी इंफेक्शन होने पर भी सामान्य गुर्दे और मूत्राशय होते हैं। किन्तु इनमें असामान्यता होने पर यथासंभव गुर्दे खराब होने से बचाना चाहिए।

- **वेसाइकोयूरेटर रिफ्लेक्स (वीयूआर) :** सामान्यत : गुर्दों से मूत्र, मूत्रवाहिनी और मूत्राशय की ओर एक ही दिशा में जाता है। वीयूआर होने पर मूत्राशय भर जाने पर मूत्र पुन : मूत्राशय से मूत्रवाहिनी व गुर्दों तक जाता है। मूत्र इंफेक्शन बच्चों में अक्सर होता है।
- **मूत्रावरोध :** मूत्र संवाहन में अवरोध मूत्रमार्ग में कई स्थानों पर हो सकता है। मूत्रवाहिनी या यूरेथ्रा सिकुड़ी हो सकती है या गुर्दे की पथरी उसी स्थान पर रहने से भी अवरोध हो सकता है। अक्सर, मूत्र वाहिनी गुर्दों या मूत्राशय में उसी स्थान से जुड़ती है और गुर्दे की पथरी मूत्र के सामान्य रास्ते में बाधा उत्पन्न कर देती है।
- **असामान्य मूत्रोत्सर्जन :** कुछ बच्चे मूत्र त्यागने में देरी करते हैं, क्योंकि वे खेलना बंद नहीं करना चाहते। वे इतने लंबे समय तक स्फिंक्टर को दवाकर रखते हैं कि समय आने पर वह विस्फारित नहीं हो जाती। इस कारण बच्चे अपना मूत्राशय पूरा खाली नहीं कर पाते। कुछ मूत्रोत्सर्जन करते हुए जोर लगाते हैं, जिससे मूत्राशय पर दबाव बढ़ने पर मूत्र पुन : मूत्रनलिका में चला जाता है। मूत्रोत्सर्जन की असामान्यता के चलते वेसाइकोयूरेटस्ट रिपल्कस होकर आघातक लिकेज और यूटीआई हो जाती है।

कैसे हो निवारण

- यदि आपके बच्चे को सामान्य मूत्रवाहिनी संस्थान है तो इसे निरंतर नियमित शौच की आदत डालें और उसकी मदद करें।
- यदि बच्चा मूत्रोत्सर्जन बराबर न करता हो तो देखें कि वह पर्याप्त द्रव्यपान करें।
- बच्चों को मूत्रत्याग के बाद मूत्रनलिका में बैक्टीरिया की रोकथाम के लिए अच्छी सफाई रखना सिखाएं। जैसे सामने से पीछे तक गीले टिशु से या लड़कियों में पानी से साफ करें।
- कुछ विसंगतियां बच्चे बड़े होने पर स्वत : समाप्त हो जाती हैं, किन्तु कुछेक के लिए सर्जीकल उपाय करने पड़ते हैं।
- वीयूआर को ठीक करने का सामान्य उपक्रम मूत्रनली का रि-इप्लांटेशन होता है। इस सर्जरी में, डॉक्टर मूत्रनली और मूत्राशय को पुन : जोड़ता है, ताकि पेशाब मूत्रनली से गुर्दों तक न जाए।

बिजली कंपनी अधिकारियों को जगाने के लिए बजाए थाली-चम्मच

बार-बार की जा रही है अघोषित कटौती के खिलाफ उमड़ा आक्रोश

इंदौर। मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा लगातार कई महीनों से की जा रही अघोषित कटौती के खिलाफ लोगों का आक्रोश अब सड़क पर उमड़ने लगा है। लोग अब थाली-चम्मच बजा कर बिजली कंपनी के अधिकारियों को नींद से जागने की कोशिश कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि एक तरफ तो बिजली कंपनी के अधिकारी दिन-रात में सैकड़ों बार घोषित कटौती करते हैं, जिससे भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं दूसरी तरफ मनमाने बिजली के बिल देकर इससे बड़ी परेशानी दे रहे हैं। बिजली कंपनी की अघोषित कटौती के खिलाफ लाल बंगला रहवासी संघ के बैनर तले रहवासियों ने प्रदर्शन किया। बिजली कंपनी के खिलाफ मुर्दाबाद के नारे भी लगाए। रहवासियों ने चेतावनी दी की यदि बिजली कंपनी अधिकारी अघोषित कटौती से बाज नहीं आए तो उग्रआंदोलन किया जाएगा।

रहवासी संघ के विकास जैन सतभैया और महेंद्र जोशी, नरेश नरुका ने बताया कि पिछले 4 महीनों से आए दिन घंटों-घंटों तक बगैर सूचना लगातार कटौती की जा रही है। कभी सुबह कभी रात, जिससे रहवासियों का जीना दूभर हो गया है। इसमें प्रमुख क्षेत्र न्यू देवास रोड, पंडितजी की चाल, गौशाला, दुबे का बगीचा, वल्लभ नगर शामिल हैं। कई बार वरिष्ठ अधिकारियों को शिकायतें की, फिर भी कोई निराकरण नहीं किया, जबकि हर माह पूरी ईमानदारी से बिजली कंपनी का बिल भरा जा रहा है। इसके बदले में बिजली कंपनी अधिकारी सिर्फ अंधेरा मिल रहा है। इसलिए रहवासियों ने बिजली कंपनी अधिकारियों को कुंभकरण की नींद में सोए हुए अधिकारियों को जगाने के लिए थाली चम्मच बजाए हैं।

लालटेन-चिमनी लेकर किया प्रदर्शन

आंदोलन में जहां एक और महिलाएं और टिया थाली चम्मच बजा रही थी वहीं पुरुषों ने हाथों में लालटेन और चिमनी ले रखी थी। बच्चों के हाथों में तख्तियां थी, जिसमें लिखा था- प्रधानमंत्री कहते हैं बेटी पढ़ाओ.. बिजली कंपनी अधिकारी कहते हैं अंधेरे में पढ़ाई करो.. लाइट न होने के कारण..डेंगू मच्छरों से परेशान हो रहे हम बच्चे। इसके बाद भी बिजली कंपनी अधिकारी अपनी बिजली डीपी व केबल की समस्या का हल नहीं करते है और 3 दिन में सुनवाई नहीं करते है और ऐसे ही कुंभकरण की नींद में सोते रहते हैं तो रहवासी संघ पाटनीपुरा झोन पहुंचकर महिलाएं चूड़ी भेंट करेंगी। रहवासी संघ द्वारा क्षेत्रीय विधायक महेंद्र हार्डिया को भी अवगत करवाया साथ ही प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर भी शिकायत की है।

पार्षद और एमआईसी सदस्य पहाड़ियां भी आंदोलन में

प्रदर्शन के दौरान जनप्रतिनिधि के रूप में. एमआईसी सदस्य और क्षेत्रीय पार्षद नंदकिशोर पहाड़िया भी मौजूद रहे। उन्होंने भी अधिकारी को मौके बुलाकर अल्टीमेटम दिया कि कुछ भी बहाना नहीं चलेगा। समस्या हल होना चाहिए। प्रदर्शन में प्रमुख रूप से गिरीश जैन, राधेश्याम नरूका, पूनमचंद सतभैया, रमेश जैन, पप्पू यादव, हेमराज शर्मा, योगेश जैन, पंकज गज्जर, विवेक जैन, प्रकाश नरूका, केतन जैन, जगदीश जैन, कैलाश नेकाड़ी, निर्मल जैन, देवीलाल गुर्जर, हेमंत जैन, गोविंद गहलोत सहित बड़ी संख्या में महिलाएं व बच्चे भी शामिल थे।

फोटो पत्रकारों के पद कम करने से संस्थानों के पैसे बचे, लेकिन पत्रकारिता की गुणवत्ता घटी : रेणुका पुरी

इंदौर। मोबाइल के आने के बाद अनेक मीडिया संस्थानों में फोटो जर्नलिस्ट के पद घटाए गए हैं। सरकारी स्तर पर भी अब फोटो पत्रकारों की उपेक्षा की जा रही है और रेडीमेड फोटो भेजकर छपवाने को प्राथमिकता दी जा रही है। इन सबसे पत्रकारिता की गुणवत्ता के साथ समझौता हुआ है। ये बातें दिल्ली से पधारी वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट एवं इंडियन एक्सप्रेस की फोटो संपादक श्रीमती रेणुका पुरी के इंदौर के वरिष्ठ फोटो पत्रकारों के 'संवाद कार्यक्रम' में प्रमुखता से सामने आईं। स्टेट प्रेस क्लब, मप्र के आयोजन में राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर फोटो पत्रकारिता की बदलती स्थिति एवं चुनौतियों पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ। प्रमुख रूप से यह बात सामने आई कि संस्थान अब फोटो पत्रकारों के पद कम करते जा रहे हैं और रिपोर्टरों से यह अपेक्षा रखने लगे हैं कि वे ही मोबाइल से फोटो क्लिक कर भेज दें। इससे पत्रकारिता की गुणवत्ता में तो फर्क पड़ा है, लेकिन संस्थानों को अपनी उसकी बजाए अपने पैसे बचाने की चिंता है। श्रीमती रेणुका पुरी एवं शहर के प्रमुख फोटो पत्रकारों ने इस बात पर भी अफसोस जाहिर किया कि कई स्थानों और घटनाओं के कवरेज में अब रिपोर्टरों को तो प्रवेश दिया जाता है, लेकिन फोटोग्राफरों को रोक दिया जाता है।

इवेंट में रेडीमेड फोटो भेजने की प्रवृत्ति, विशेषकर सरकारी आयोजनों में बढ़ी है। इसके पीछे कारण यह है कि सरकारी संस्थाएं डरती हैं कि फोटोग्राफर कहीं किसी कमी का फोटो न क्लिक कर ले। यह एक तरह से फोटो पत्रकारिता का दायरा घटाने की कोशिश है। संवाद कार्यक्रम में यह बात स्पष्ट हुई कि दिल्ली से लेकर प्रदेश, जिला और तहसील स्तर पर फोटो पत्रकार यह महसूस करते हैं कि उनकी विधा का दायरा समेटने की कोशिश की जा रही है और इसे लेकर उनमें चिंता है। यद्यपि श्रीमती रेणुका पुरी ने उम्मीद जाहिर की कि फोटो पत्रकारिता के अच्छे दिन फिर लौटेंगे। वहीं उन्होंने कहा- फोटो पत्रकारों को आपस में समन्वय, सहयोग और धैर्य भी बढ़ाना होगा। किसी इवेंट में धक्का-मुक्की या पहले फोटो लेने की होड़ की बजाए धैर्य से समन्वय करें तो सबको अच्छे एंगल से फोटो अंततः मिल ही जाता है।

आयुष्मान भारत योजना अंतर्गत जनजागरूकता हेतु वाल्कथॉन का आयोजन

इंदौर। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन और आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं स्वच्छ शहर स्वच्छ राष्ट्र के बारे में आम नागरिकों में जागरूकता फैलाने एवं अधिक से अधिक आयुष्मान हितग्राहियों तक योजना का लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से आज वाल्कथॉन का आयोजन किया गया। वॉल्कथान नेहरू स्टेडियम से प्रारंभ होकर जीपीओ चौराहा,शिवाजी वाटिका होते हुए वापस नेहरू स्टेडियम पर सम्पन्न हुई। वाल्कथॉन का शुभारंभ नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा एवं सीएमएचओ डॉ.बी.एस. सैत्या द्वारा हरी झंडी दिखा कर किया गया। वाल्कथॉन में जिला प्रशासन एवं वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में स्वास्थ विभाग की ओर से आयुष्मान शाखा प्रभारी देवेंद्र रघुवंशी एवं नगर निगम के अमित दुबे द्वारा समन्वय किया गया। पुलिस विभाग द्वारा कार्यक्रम में सुरक्षा व्यवस्था प्रदान करने के साथ ही वाल्कथॉन रैली में भाग लेकर फिट इंडिया का संदेश दिया गया। रैली में नगर निगम एनजीओ टीम,एमपी स्काड्रन एनसीसी, सिविल डिफेंस टीम, विक्रांत कालेज, अरविंदो मेडिकल कॉलेज से सैकड़ों की संख्या मे प्रतिभागियों ने भाग लिया। वाल्कथॉन में हजारों की संख्या में नागरिकों,प्रबुद्धजनों एवं सहयोगी संस्थाओं द्वारा भाग लिया। वर्ल्ड हार्ट डे पर पुलिस एवं चिकित्सा विभाग द्वारा फिट इंडिया का संदेश दिया गया। वाल्कथॉन रैली में हजारों जनभागीदारों द्वारा आयुष्मान भारत एवं स्वच्छता का सिरमोर इंदौर रहेगा नम्बर वन के स्वरों से गूंज ऊठा। कार्यक्रम की शुरुआत एंकर संजय नागर एवं रेड एफ. एम. आर.जे. शिव ने आयुष्मान भारत एवं स्वच्छता ही सेवा स्वर से आगाज किया तथा सुश्री आरती माहेश्वरी द्वारा जुम्बा थेरेपी की गई। इसमें हजारों की संख्या में प्रतिभागियों तथा शहर की विभिन्न संस्थाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मीडिया पार्टनर रेड एफ.एम. एवं गुरुजी सेवा न्यास माधव श्रृष्टि एवं एडवोकेट नितिन सिंह भाटी ,लायंस क्लब इंटरनेशनल, मेदांता हॉस्पिटल, इंडेक्स मेडिकल कालेज, अरविंदो मेडिकल कॉलेज, सेवाकुंज हॉस्पिटल एल.एन.सी.टी. मेडीकल कालेज,गौरव शर्मा सोशल एक्टिविस्ट कुसुमश्री मेडिकोज राऊ,भोलेशंकर मार्बल प्रा. लि. (एसबीएम ग्रुप),इंदौरी सुबह एवं मेजिक जीरो की महत्वपुर्ण भूमिकाएं रही।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी जयश्री जैन द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स 13, प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड इंदौर से मुद्रित एवं 22, प्रेस काम्पलेक्स, प्रेस हाऊस, ए.बी. रोड इंदौर 452008 से प्रकाशित। प्रधान संपादक- डॉ. राजेश जैन, मो. 9425322301 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)